This question paper contains 3 printed pages.]

7757 *आपका अनुक्रमांक* .....

M.A. (एम.ए.) / II **A**

HINDI (हिन्दी)

Group (A) - Bhaktikaleen Kavya

वर्ग (क) - भक्तिकालीन काव्य

Paper 16 - Krishna Bhakti Kavya

प्रश्नपत्र 16 - कृष्ण भक्ति काव्य

(प्रवेशवर्ष 2000 और तत्पश्चात्)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 50*

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : *प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक एम.ए. हिन्दी परीक्षा के वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फॉर्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य है। वर्ग 'अ' (नियमित पूर्व विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।*

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरूनि चलत रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किए।

[P.T.O.

चारु कपोल, लोल लोचन, गोरोचन तिलक दिए।
लट लटकनि मनु मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए।
कठुला कंठ, वज्र केहरि नख, राजत रूचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए॥

अथवा 7

जाहि कहौ तुम कान्ह ताहि कोउ पितु नहीं माता।
अखिल अंड ब्रह्मंड बिस्व उनही में जाता॥
लीला को अवतार लै धरि आए तन स्याम।
जोग जुगुत ही पाइयै पारब्रह्म-पद-धाम॥
सुनौ ब्रज नागरी!

7

(ख) माई सांवरे रंग राची।
साज सिंगार बाँध पग घुँघर, लोक लाज तज नाची।
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ संगत, श्याम प्रीत जग साँची।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसि दिन, काल व्याल री बाँची।
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगरी बाताँ काँची।
मीराँ सिरि गिरिधर नट नागर भगति रसीली जाँची॥

अथवा 7

मानुष हौं तो वही रसखानि बसौ ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा बस मेरो चरौं नित नंद की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्‌यो कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन॥

2. 'सूरदास वात्सल्य सम्राट् हैं।' – विचार कीजिए।

अथवा 12

'सूरदास ने निर्गुण की अपेक्षा सगुण की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3. नंददास की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा 12

'और कवि गड़िया नन्ददास जड़िया' – इस कथन का विवेचन कीजिए।

4. 'रसखान सम्प्रदाय निरपेक्ष कवि हैं।' इस कथन के आलोक में भक्ति काव्य में रसखान के योगदान की समीक्षा कीजिए।

अथवा 12

मीराबाई के काव्य-आलम्बन का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।